Bb – यीशु बुद्धि और डील-डौल में बढ़ा, और परमेश्वर और
मनुष्यों के पक्ष में लुका २: ५१-५२ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु बुद्धि और डील-डौल में बढ़ा, और परमेश्वर और मनुष्यों के पक्ष में.

लुका २: ५१-५२

खोदाई: यीशु के बारे में यह क्या कहता है कि वह लगभग तीस वर्ष की आयु तक अपने माता-पिता का आज्ञाकारी रहा? आपको क्या लगता है कि मरियम ने अपने दिल में क्या रखा है? यीशु और किन तरीकों से आज्ञाकारी था?

प्रतिबिंब: आपने अपने पिता और अपनी मां का सम्मान कैसे किया है? क्या यह आसान या कठिन रहा है? यदि आपके पिता या माता आपसे परमेश्वर के वचन के विरुद्ध कुछ करने के लिए कहते हैं तो आप किस निर्णय का सामना कर रहे हैं? यीशु उसके बारे में क्या कहेंगे?

लूका अपने पाठकों को यीशु के बारह वर्ष की आयु में यरूशलेम जाने और तीस वर्ष की आयु में उसके बपतिस्मे के बीच के तथाकथित “मौन वर्षों” का सारांश विवरण प्रदान करता है। तब यीशु [अपने माता-पिता] के साथ नासरत चला गया और उनकी आज्ञा का पालन करने लगा। परन्तु उसकी माता ने इन सब बातों को अपने हृदय में संजोए रखा। और वह बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और लोगों के अनुग्रह में बढ़ता गया (लूका २:५१-५२)।

हेरोदेस की मृत्यु के बाद, मिस्र से नासरत लौटने के साथ, येशु ने युवावस्था और शुरुआती मर्दानगी का जीवन शुरू किया, सभी आंतरिक और बाहरी विकास के साथ, सभी स्वर्गीय और सांसारिक स्वीकृति के साथ जो इसके योग्य थे। लेकिन इसमें कुछ भी असाधारण नहीं था। यीशु की परवरिश। अगले अठारह से बीस वर्ष केवल इस अर्थ में मौन थे कि परमेश्वर ने अपने लोगों से बात करने के लिए भविष्यद्वक्ता नहीं भेजा। लेकिन आज, झूठे धर्मों ने “मसीह” को अपनी स्वयं की मूल्य प्रणालियों में शामिल करके नई वाचा की सच्चाई को कमजोर करने का प्रयास किया है। गपशप-पत्रिकाओं के अपने आध्यात्मिक समकक्ष में उन्होंने उनके बारे में कई मिथकों का आविष्कार किया है।

उन्होंने इस समय के दौरान पूरी दुनिया में मसीह की यात्रा करना उचित समझा है। “भारत में यीशु” नामक एक फिल्म का निर्माण किया गया है। अन्य दस्तावेजों का तात्पर्य है कि उन्होंने फारस और तिब्बत का दौरा किया। दूसरों ने कहा कि उन्होंने ड्र्यूड्स के साथ इंग्लैंड में अध्ययन किया। जबकि अन्य मानते हैं कि

Bb – यीशु बुद्धि और डील-डौल में बढ़ा, और परमेश्वर और
मनुष्यों के पक्ष में लुका २: ५१-५२ | 2

उन्होंने जापान की यात्रा की थी। मॉरमन शिक्षा देते हैं कि प्रभु अमेरिका में लमेनाइट्स, नफाइयों, जेरेदियों और मुलेकियों की खोई हुई जनजातियों को उपदेश देने आए थे। कुछ का यह भी मानना है कि अलौकिक प्राणियों ने उनसे मुलाकात की और विभिन्न चमत्कार और जादू के कार्य किए। वाह, येशुआ एक व्यस्त आदमी लगता है!

यह सब केवल उन लोगों के कानों की खुजली को संतुष्ट करता है जो हमेशा सीखते रहते हैं लेकिन सत्य के ज्ञान तक कभी नहीं पहुँच पाते (दूसरा तीमुथियुस ४:३ और ३:७)। इस बात का ज़रा सा भी प्रमाण नहीं है कि यीशु ने गलील में एक यहूदी बढ़ई के यहूदी बेटे से अपेक्षित जीवन जीने के अलावा १२ से ३० वर्ष की आयु के बीच कुछ भी किया। इसके विपरीत, यदि प्रभु अठारह वर्षों तक अनुपस्थित रहे होते तो उनके समकालीन उनसे उतने परिचित नहीं होते जितना वे कहते थे: क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं है, जिसके माता-पिता को हम जानते हैं (यूहन्ना ६:४२)? इन विस्तृत बनावटों का उद्देश्य, एक ओर, कुछ श्रेष्ठ ज्ञान (जैसे नोस्टिक्स) होने में लोगों के गर्व को पूरा करना है, और, दूसरी ओर, ब्रित के केंद्रीय संदेश से ध्यान आकर्षित करना चड़ाशाह। अर्थात्, कि मनुष्य अपने पापों के कारण परमेश्वर से अलग हो गए हैं और प्रायश्चित की आवश्यकता में खड़े हैं (निर्गमन Bz – प्रायश्चित पर मेरी टिप्पणी देखें), लेकिन यह कि मसीहा येशु ने एक बार के लिए प्रायश्चित किया है और इसे किसी को भी प्रदान करता है जो करेगा उस पर और उसके वचन पर विश्वास करो।

बाइबल केवल यह सिखाती है कि वह अपने माता-पिता के साथ वापस नासरत चला गया।

लुका की यीशु की मानवता में विशेष रुचि थी। ये दो पद बारह वर्ष की आयु से लेकर लगभग तीस वर्ष की आयु तक उसके पालन-पोषण का सार प्रस्तुत करते हैं। तब वह अपने माता-पिता के साथ नासरत चला गया और उनकी आज्ञा का पालन करने लगा। येरूशलेम आसपास की सभी भूमि से ऊंचा है, इसलिए कहीं भी जाने के लिए आपको नीचे जाना पड़ता है। इस मामले में, भले ही वे उत्तर की ओर जा रहे थे, वे नीचे नासरत गए।

यह साबित करने का सबसे अच्छा सबूत है कि आज्ञाकारिता का मतलब हीनता नहीं है। यहाँ हमारे पास ईश्वर-मनुष्य है, जो हर कल्पनीय तरीके से श्रेष्ठ है, दो पापी कनिष्ठों का आज्ञाकारी है क्योंकि वह उस समय उनके जीवन के लिए ईश्वरीय आदेश और ईश्वरीय इच्छा थी। जब बाइबल कहती है: पत्नियाँ अपने पतियों को प्रभु के रूप में प्रस्तुत करती हैं (इफिसियों ५:२२), मुद्दा एक वरिष्ठ के प्रति आज्ञाकारी होने का निम्न स्तर का नहीं है। इसके बजाय, यह ईश्वरीय आदेश, ईश्वरीय आदेश और ईश्वरीय इच्छा का विषय है। विवाह में क्या होना चाहिए एक समान स्वेच्छा से भगवान की दिव्य इच्छा को ध्यान में रखते हुए दूसरे समान के लिए आज्ञाकारी बनना है (उत्पत्ति Lvपर मेरी टिप्पणी देखें – मैं एक महिला को सिखाने या एक आदमी पर अधिकार रखने की अनुमति नहीं देता, उसे चुप रहना चाहिए) .

यीशु अपने माता-पिता के प्रति आज्ञाकारी था (निर्गमन Do पर मेरी टिप्पणी देखें

Bb – यीशु बुद्धि और डील-डौल में बढ़ा, और परमेश्वर और
मनुष्यों के पक्ष में लुका २: ५१-५२ | 3

– अपने पिता और अपनी माता का सम्मान करें), वह तोराह के प्रति आज्ञाकारी था, वह सरकार के प्रति आज्ञाकारी था, वह अपने पिता के प्रति आज्ञाकारी था, और वह मरते दम तक आज्ञाकारी था . आज्ञाकारिता उनके जीवन की विशेषता थी। यह इस तथ्य के आलोक में बहुत दिलचस्प है कि आज इतने सारे लोग विद्रोह कर रहे हैं और अपने “अधिकारों” की मांग कर रहे हैं। वे परमेश्वर के पुत्र का अनुकरण करने से भी बुरा कर सकते थे।

मौन वर्षों के दौरान यीशु वहीं रहे। उनमें सभी मानवीय भावनाएँ थीं, अच्छी और बुरी, ऊँची और नीची। वह हँसा (मेरा यीशु हँसा). उसने उत्सवी पारिवारिक समारोहों के आनंद का अनुभव किया, और अपने परिवार से प्यार किया जैसा कि मरियम, मार्था और लाजर के घर में देखा गया था। यूसुफ की मृत्यु के बाद, वह अपने सांसारिक पिता के बाद नासरत में बढ़ई बनने में सफल हुआ (मत्ती १३:५५)। बाद में सुसमाचारों में यूसुफ का कोई उल्लेख हमें यह विश्वास करने की ओर नहीं ले जाता है कि वह इस समय से अधिक वर्षों तक जीवित नहीं रहा।

यहूदी घरेलू जीवन, विशेष रूप से देश में, बहुत सरल था। भोजन भयानक बुनियादी थे। केवल सब्त और त्योहारों पर ही फैंसी भोजन तैयार किया जाता था। वही सादगी पहनावे और आचार-विचार में देखने को मिलेगी। उनकी इच्छाएँ कम थीं और जीवन सरल था। लेकिन परिवार के सदस्यों के बीच बंधन मजबूत और प्रेमपूर्ण थे, और एक दूसरे पर प्रभाव गहरा था। मरियम और यूसुफ विश्वास करने वाले शेष लोगों का हिस्सा थे, और शास्त्रों की शिक्षा और आज्ञाकारिता का अत्यधिक महत्व था। फिर भी, पिता परमेश्वर पुत्र को सुबह-सुबह जगाना जारी रखेंगे ताकि उन्हें सिखा सकें और उन्हें क्रूस पर इंगित कर सकें (यशायाह Ir पर मेरी टिप्पणी देखें – क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी मदद करता है, मैं अपना चेहरा चकमक की तरह स्थापित करूंगा)।

नासरत में उन वर्षों के दौरान मसीहा चार क्षेत्रों में विकसित हुआ: वह ज्ञान (मानसिक विकास) और कद (शारीरिक विकास), और परमेश्वर (आध्यात्मिक विकास) और अन्य लोगों (सामाजिक विकास) के पक्ष में बढ़ा। लेकिन युवा यीशु था नासरत के छोटे शहर के लिए लंबे समय तक नहीं। यरूशलेम की पवित्रता और भव्यता ने उसे बुलाया। वह अपनी वार्षिक यात्राओं के दौरान शहर की महक और संगीत को जान गया, यहां तक कि वह जैतून के पहाड़, गेथसेमेन के बगीचे, किड्रोन घाटी और स्वयं मंदिर जैसे स्थानीय स्थलों के माध्यम से अपना रास्ता बनाने में सहज हो गया। हर गुजरते साल के साथ, येशु एक छोटे बच्चे से एक बढ़ई के चौकोर कंधों और सुडौल हाथों वाले एक आदमी के रूप में बढ़ा, वह ज्ञान और विश्वास दोनों में बढ़ता गया।

कई लोगों के लिए एक या दोनों माता-पिता का आज्ञाकारी होना असंभव नहीं तो बहुत मुश्किल काम है। परित्याग हो सकता है; शारीरिक या मानसिक शोषण भी हो सकता है। यहां तक कि यौन शोषण भी। ड्रग्स या शराब की लत। तो आप उसके प्रति आज्ञाकारी कैसे हो सकते हैं! यहाँ उत्तर है: यदि आपको कुछ अवैध या अनैतिक करने के लिए कहा जा रहा है, तो परमेश्वर के वचन को प्राथमिकता दी जाती है। स्वयं प्रभु ने कहा: जो कोई भी

Bb – यीशु बुद्धि और डील-डौल में बढ़ा, और परमेश्वर और
मनुष्यों के पक्ष में लुका २: ५१-५२ | 4

अपने पिता या माता को मुझ से अधिक प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं है; जो कोई अपने बेटे या बेटी को मुझसे अधिक प्यार करता है वह मेरे योग्य नहीं है। जो कोई अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे नहीं चलता, वह मेरे योग्य नहीं। जो कोई अपना प्राण पाएगा वह उसे खोएगा और जो कोई मेरे कारण अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा (मत्ती १०:३७-३९)।

परन्तु उसकी माता ने इन सब बातों को अपने हृदय में संजोया, अर्थात् सुरक्षित रखना या पहरा देना। संभलके रखना शब्द के अपूर्ण काल का अर्थ है कि वह यरूशलेम से लौटने के बाद अपने बारह वर्षीय शब्दों पर चिंतन और चिंतन करती रही, भले ही वह वास्तव में उन्हें समझ नहीं पाई: तुम मुझे क्यों खोज रहे थे? क्या आप नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर [या मेरे पिता के व्यवसाय के बारे में] (लूका २:४९) में होना था? उसे बहुत कुछ याद रखना था, और अभी भी बहुत कुछ सीखना था। लेकिन परमेश्वर अपनी माँ के प्रति समर्पित रहे, और वह उनके प्रति। लेकिन जैसे ही वह तीस वर्ष का हुआ, नासरत के यीशु ने जान लिया कि मौन अब कोई विकल्प नहीं था। उसके लिए अपनी नियति को पूरा करने का समय आ गया था। यह एक ऐसा फैसला था जो दुनिया को बदल देगा। यह उसकी तड़प-तड़प कर मौत का कारण भी बनेगा।